

---

Nishadaproktam Bhillasya Sadashivabhaktiprashamsa

निषादप्रोक्तं भिल्लस्य सदाशिवभक्तिप्रशंसा

Document Information

---

Text title : Nishadaprokta Bhillasya Sadashivabhaktiprashamsa

File name : bhillasyasadAshivabhaktiprashaMsAniShAdaproktaM.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 19 | 228-237||

Latest update : April 28, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 28, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

## निषादप्रोक्तं भिल्लस्य सदाशिवभक्तिप्रशंसा



यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ।  
भाग्यस्य तव नान्तोऽति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ २२८ ॥

तव धन्यतरो देवः (?) सत्यं सत्यं न संशय ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २२९ ॥

तवैव जीवमं धन्यं सत्यं सत्यं न संशयः ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २३० ॥

तवैव जन्म सफलं सत्यं सत्यं न संशयः ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २३१ ॥

तवैव जननी धन्या सत्यं सत्यं न संशयः ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २३२ ॥

तवैव जनको धन्यः सत्यं सत्यं न संशयः ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २३३ ॥

तवैव कुलमुत्कृष्टं सत्यं सत्यं न संशयः ।  
यतः सदाशिवे भक्तिरीदृशी त्वयि राजते ॥ २३४ ॥

शक्तिस्त्वमानुषी सेय धैर्यमेतदमानुषम् ।  
भक्तिरेतादृशी लोके न दृष्टा न श्रुता ध्रुवन् ॥ २३५ ॥

यस्यास्त्वेतादृशी भक्तिर्महादेवे सुरोत्तमे ।  
तस्य हस्तगतैवास्ति मुक्तिकान्ता न संशयः ॥ २३६ ॥

त्वयेदं मानुषं रूपं धृतमस्ति शिवप्रिय ।  
भवान्कश्चन देवोऽस्ति देवमध्ये न संशयः ॥ २३७ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते निषादप्रोक्तं भिल्लस्य सदाशिवभक्तिप्रशंसा सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १९ । २२८-२३७ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyaH saptamAMshaH . adhyAyaH 19 . 228-237

..


Notes:


Due to his Intense Devotion Bhilla भिल्ल tries to protect the Śivaliṅga शिवलिङ्ग from damage that might be caused by the stones as the temple falls. Ṛṣi Niṣāda ऋषि निषाद who happens to witness the event is much impressed and praises the deep devotion of the Bhilla भिल्ल towards SadāŚiva सदाशिव.

Chapter 19 further has the story about the past life of the Bhilla भिल्ल.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Nishadaproktam Bhillasya Sadashivabhaktiprashamsa*  
pdf was typeset on April 28, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

